Nai Dunia (Indore), 27th February 2015, Page – 02

आईआईटी इंदौर की मदद से बनेगा विश्व का सबसे बड़ा टेलीस्कोप

05
बिलियन डॉलर के अंतरराष्ट्रीय प्रोजेक्ट

20
देश मिलकर कर रहे निर्माण

इंदौर। आईआईटी इंदौर विश्व के सबसे बड़े टेलीस्कोप (दूरबीन) के निर्माण में भागीदारी करेगा। संस्थान को पांच बिलियन डॉलर लागत वाले अंतरराष्ट्रीय खगोलीय प्रोजेक्ट से जुड़ने का मौका मिला है। विश्व के अब तक के सबसे महत्वाकांक्षी रेडियो टेलीस्कोप निर्माण के प्रोजेक्ट में आईआईटी को संस्थापक सदस्य के रूप में शामिल किया गया है। प्रोजेक्ट में शामिल देश का यह एक मात्र शिक्षण संस्थान है।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्क्वेयर किमी एरे नामक एक विशाल टेलीस्कोप का निर्माण किया जा रहा है। इसकी डिश की परिधि एक वर्ग किमी होगी। खगोलीय खोजों के लिए उपयोगी इस बड़े टेलीस्कोप का निर्माण अलग-अलग देश मिलकर कर रहे हैं। निर्माण के लिए एसकेए कंसोरटियम नामक विभिन्न देशों के वैज्ञानिक संस्थाओं का एक समूह बनाया है। समूह टेलीस्कोप के निर्माण के अलग-अलग भाग की जिम्मेदारी अलग-अलग देशों की संस्थाओं में बांट रहा है। 16-17 फरवरी को एसकेए-कंसोरटियम ने भारत में टेलीस्कोप की योजना पर काम करने के लिए एसकेए-इंडिया समूह की स्थापना की। इस समूह में देश के नेशनल सेंटर फॉर रेडियो एस्ट्रोफिजिक्स के साथ ही आईआईटी इंदौर को शामिल किया गया है।

दस चरणों में से तीन की जिम्मेदारी मिली हमें

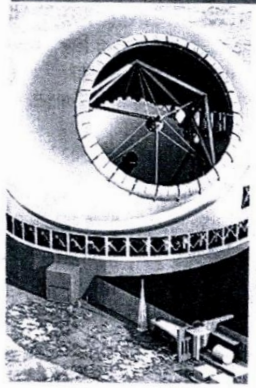

आईआईटी इंदौर के अनुसार विशाल टेलीस्कोप की डिजाइन पर कुल दस चरणों में काम होना है। इनमें से तीन चरणों पर काम की जिम्मेदारी भारत के वैज्ञानिकों को मिली है। नेशनल सेंटर फॉर रेडियो एस्ट्रोफिजिक्स पहले ही दैत्याकार रेडियो टेलीस्कोप स्थापित कर चुका है लिहाजा विश्वस्तर पर इस प्रोजेक्ट के लिए देश के इस संस्थान को चुना गया है। आईआईटी इंदौर भी 2014 में अपना खुद का रेडियोटेलीस्कोप बना चुका है। इसी आधार पर आईआईटी को भी इस प्रोजेक्ट के भारतीय समूह में शामिल किया गया है।

आईआईटी इंदौर देश का अकेला ऐसा इंस्टिट्यूट है, जो इस इंटरनेशन प्रोजेक्ट में भागीदार बना है। इससे हमारी रिसर्च की काबिलियत और बेहतर होगी।

- **डॉ. निर्मला मेनन**, मीडिया ऑफिसर, आईआईटी इंदौर

अंतरिक्ष के रहस्यों का लग सकेगा पता

एसकेए प्रोजेक्ट के अंतर्गत देश के 20 देश मिलकर सबसे बड़ा और एडवांस रेडियो टेलीस्कोप बनाने में जुटे हैं। अंतरिक्ष के रहस्यों का पता लगाने और ब्रह्मांड को ज्यादा करीब से देखने के लिए विश्व के इस सबसे बड़े टेलीस्कोप का निर्माण किया जा रहा है। 2014 से ही दुनिया के अलग-अलग देशों के वैज्ञानिकों को इस टेलीस्कोप की डिजाइन के अलग-अलग काम सौंपे गए हैं। आईआईटी इंदौर ने अपने यहा तीन इंटरडिसीप्लीनरी रिसर्च सेंटर शुरू किए हैं। इसमें बॉयोसाइसेस, मटैरियल साइंस, इंजीनियरिंग और एस्ट्रोनॉमी को शामिल किया गया है। खगोलशास्त्र में बीते समय की गई रिसर्च के चलते ही आईआईटी इंदौर को इस बड़े प्रोजेक्ट में शामिल किया गया है। इससे पहले आईआईटी इंदौर के प्रोफेसर ब्रह्मांड की उत्पत्ति के रहस्य की खोज के लिए सर्न में चल रहे महाप्रयोग में भी शामिल हो चुके हैं।